स्प्रिंग सीजन 2026

फैशन विजन, रंगों की अभिव्यक्ति और नई सोच

स्प्रिंग सीजन 2026 फैशन की दुनिया में केवल मौसमी बदलाव नहीं, बल्कि सोच और उपभोग के तरीकों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत देता है। यह सीजन उत्साह, ऊर्जा और आत्म-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ Conscious Consumption यानी जिम्मेदार उपभोग की अवधारणा को केंद्र में रखता है। इस वर्ष फैशन न सिर्फ सुंदर दिखने पर केंद्रित है, बल्कि यह टिकाऊपन, व्यक्तिगत शैली और तकनीकी नवाचार का संतुलित रूप प्रस्तुत करता है।

नूर हिना खान
लेखिका

रंगों में संतुलन और विरोधाभास

स्प्रिंग 2026 की रंग योजना में स्पष्ट विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर Pantone द्वारा घोषित 'Cloud Dancer' जैसे सौम्य ऑफ-व्हाइट टोन शांति और सादगी का प्रतीक बनते हैं, वहीं दूसरी ओर सनशाइन येलो, फायर इंजन रेड और फ्रेश ग्रीन जैसे चमकीले रंग ऊर्जा और आत्मविश्वास को दर्शाते हैं। यह रंग संयोजन आधुनिक समाज की विविध भावनाओं और बदलते दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है।

फैब्रिक और टेक्सचर में हल्कापन

इस सीजन फैब्रिक चयन में 'वेटलेस क्वालिटी' को प्राथमिकता दी गई है। हवा जैसे हल्के कपड़े, जैसे सेमी-ओपेक वूल, ऑर्गेंजा और अल्ट्रा-लाइट निट्स खासतौर पर चलन में रहेंगे। इसके साथ ही Lyocell, Hemp और Recycled Fibers जैसे सस्टेनेबल फैब्रिक्स अब विकल्प नहीं, बल्कि फैशन इंडस्ट्री की आवश्यकता बन चुके हैं। ब्रांड्स पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठा रहे हैं।

प्रमुख स्टाइल ट्रेंड्स

2025 की 'क्वाइट लग्जरी' के बाद 2026 में 'लाउड लग्जरी' की वापसी देखी जा रही है। टैसल्स, फ्रिंज, टेक्सचर और समृद्ध डिजाइन वाले परिधान इस सीजन की पहचान होंगे। साथ ही पोल्का डॉट्स और ज्योमेट्रिक प्रिंट्स नए रूप में सामने आएंगे, जहां अलग-अलग पैटर्न को एक साथ लेयर किया जाएगा। फैशन विशेषज्ञ इसे 'पैटर्न मिक्सिंग का नया दौर' मानते हैं।

भारतीय शहरी फैशन में को-ऑर्ड सेट्स, इंडो-वेस्टर्न आउटफिट्स और आधुनिक टच वाले पारंपरिक परिधान मुख्यधारा में रहेंगे। आरामदायक फिट और पेस्टल रंगों का संयोजन लोकप्रिय होता दिख रहा है।

एक्सेसरीज और डिटेलिंग

एक्सेसरीज में ओवरसाइज्ड सनग्लासेस, बड़े स्ट्रक्चर्ड टोट बैग्स और स्कार्फ को बेल्ट की तरह पहनने का चलन फिर से लौट रहा है। यह Y2K नॉस्टैल्जिया का आधुनिक संस्करण है। ज्वेलरी में मिनिमल डिजाइन और स्कल्प्चरल पेंडेंट नेकलेस को प्राथमिकता दी जा रही है।

पुरुषों के फैशन में नया संतुलन

पुरुषों के फैशन में भी व्यावहारिक बदलाव देखने को मिल रहा है। स्नीकर्स की जगह लोफर्स और डर्बी शूज, स्पोर्ट्स जैकेट, जैक्वार्ड फैब्रिक्स और हल्के ओवरशर्ट्स लोकप्रिय हो रहे हैं। आराम और एलिगेंस का संतुलन पुरुषों की नई पहचान बनता जा रहा है। स्प्रिंग सीजन 2026 का फैशन केवल ट्रेंड्स तक सीमित नहीं है। यह जिम्मेदारी, रचनात्मकता और व्यक्तिगत पहचान का संगम है। बदलती जीवनशैली और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच यह सीजन फैशन को एक अधिक संवेदनशील और सार्थक दिशा में आगे बढ़ाता है।

फिल्म समीक्षा

हैप्पी पटेल

आमिर खान प्रोडक्शंस की यह फिल्म खुद को एक अलग और बेधड़क कॉमेडी-स्पाई पैरोडी के रूप में पेश करती है। हैप्पी पटेल पारंपरिक बॉलीवुड कॉमेडी नहीं है, बल्कि यह जानबूझकर अराजक, बेतुकी और "अनफिल्टर्ड" बनने की कोशिश करती है। यही वजह है कि फिल्म या तो आपको कुछ जगहों पर हंसाएगी, या फिर कई मौकों पर असहज और थका देगी। फिल्म की कहानी हैप्पी पटेल नाम के एक अजीब-से जासूस के इर्द-गिर्द घूमती है, जो भाषा, संस्कृति और हालात को समझने में बार-बार चूक करता है। यह गलतफहमियां फिल्म का मुख्य हास्य आधार हैं। कहानी का ढांचा काफी ढीला है और इसमें कोई मजबूत स्पाई थ्रिल या ठोस प्लॉट नहीं मिलता। फिल्म ज्यादातर सीन-टू-सीन जोक्स, स्केच-जैसे एपिसोड्स और शॉक वैल्यू पर टिकी हुई है। वीर दास अपने किरदार में पूरी ऊर्जा झोंक देते हैं। उनका अभिनय अलग है, लेकिन लगातार ऊंची टोन, अराजक हरकतों और गाली-प्रधान संवादों के कारण किरदार कई बार ओवरडोज लगने लगता है।

मिथिला पालकर स्क्रीन पर फ्रेश दिखती हैं, मगर उनके किरदार को गहराई नहीं मिलती। शारिब हाशमी अपनी टाइमिंग और पंचलाइनों से कुछ सीन संभाल लेते हैं। मोना सिंह का रोल साफ तरह से डेवलप नहीं हो पाता। आमिर खान का कैमियो तो है, लेकिन प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहता है। निर्देशक की मंशा साफ है, एक बिंदास, सीमाएं तोड़ने वाली कॉमेडी बनाना, लेकिन समस्या यह है कि निर्देशन में संतुलन की कमी है। फिल्म कई जगहों पर यह तय नहीं कर पाती कि उसे स्मार्ट पैरोडी बनना है या सिर्फ शोर-शराबे वाली बेतुकी कॉमेडी।

तकनीकी रूप से फिल्म औसत है। कैमरा वर्क साधारण है, बैकग्राउंड म्यूजिक याद नहीं रहता और एडिटिंग ढीली है। कई सीन काटे जा सकते थे, जिससे फिल्म ज्यादा टाइट और असरदार बन सकती थी। फिल्म का सबसे विवादित पहलू इसकी अत्यधिक गाली-प्रधान भाषा है। कुछ जगह यह किरदारों की अराजकता दिखाने में काम आती है, लेकिन ज्यादातर मौकों पर गालियां सिर्फ जबरन हंसी निकालने का जरिया लगती हैं। उनकी अधिकता हास्य को कमजोर करती है और पारिवारिक दर्शकों के लिए फिल्म को लगभग असहज बना देती है। हैप्पी पटेल एक एक्सपेरिमेंटल फिल्म है जो हर दर्शक के लिए नहीं बनी। इसमें कुछ मज़ेदार पल हैं, लेकिन कमजोर कहानी, ओवरडोज गालियां और असंतुलित निर्देशन इसे पूरी तरह कामयाब नहीं होने देते। अगर आपको अनफिल्टर्ड, अजीब और बिना दिमाग लगाए देखने वाली कॉमेडी पसंद है, तो यह फिल्म आपको कुछ हंसी दे सकती है। अगर आप स्मार्ट, सधी हुई और पारिवारिक कॉमेडी ढूंढ रहे हैं, तो यह फिल्म शायद आपको निराश करेगी।

समीक्षक -प्रदीप शर्मा

जिंदगी का सफर

सिनेमा की एवरग्रीन ब्यूटी रेखा

भारतीय सिनेमा की 'एवरग्रीन ब्यूटी' कही जाने वाली अभिनेत्री रेखा का व्यक्तित्व और करियर किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। 10 अक्टूबर 1954 को चेन्नई में जन्मी भानुरेखा गणेशन उर्फ रेखा ने अपनी मेहनत और समर्पण से वह मुकाम हासिल किया, जहां आज वे एक जीवंत किंवदंती (Legend) मानी जाती हैं।

रेखा का फिल्मी सफर चुनौतियों से भरा रहा। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एक बाल कलाकार के रूप में तेलुगु फिल्म 'रंगुला रत्नम' से की थी। 1970 में मात्र 16 साल की उम्र में 'सावन भादों' फिल्म से उन्होंने बॉलीवुड में कदम रखा। शुरुआती दिनों में उन्हें उनके रंग-रूप और हिंदी न बोल पाने के कारण काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन रेखा ने हार नहीं मानी। 70 के दशक के उत्तरार्ध में उन्होंने खुद में, जो क्रांतिकारी बदलाव किया, उसने पूरी इंडस्ट्री को हैरान कर दिया। फिल्म 'दो अनजाने' (1976) उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुई। उन्होंने अपने करियर में सिलसिला, मिस्टर नटवरलाल, मुकद्दर का सिकंदर और कई ब्लॉकबस्टर हिट फिल्मों में अपने आइकॉनिक परफॉर्मेंस से लोगों के दिल जीत लिए।

रेखा की अभिनय क्षमता का लोहा दुनिया ने तब माना जब 1981 में फिल्म 'उमराव जान' आई। इस फिल्म में एक तवायफ के किरदार को उन्होंने अपनी आंखों की नजाकत और बेहतरीन संवाद अदायगी से अमर कर दिया, जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया। इसके अलावा 'खूबसूरत', 'खून भरी मांग' और 'उत्सव' जैसी फिल्मों ने यह साबित कर दिया कि वे हर तरह की भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

रेखा ने लगभग 180 से अधिक फिल्मों में काम किया, जिनमें रेखा के अलग-अलग रूप दिखाई पड़े। रेखा केवल अपने अभिनय ही नहीं, बल्कि अपनी रहस्यमयी जीवनशैली और अद्वितीय फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं। आज भी जब वे कांजीवरम साड़ियों, भारी आभूषणों और डार्क रेड लिपस्टिक में रेड कार्पेट पर उतरती हैं, तो नई पीढ़ी की अभिनेत्रियां भी उनके सामने फीकी नजर आती हैं। उनकी फिटनेस और सौंदर्य आज भी 71 वर्ष की आयु (2026 तक) में चर्चा का विषय बना रहता है। उनका निजी जीवन हमेशा विवादों और चर्चाओं के घेरे में रहा, लेकिन उन्होंने अपनी गरिमा कभी कम नहीं होने दी। रेखा को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2010 में पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया है। वे राज्यसभा की सदस्य भी रह चुकी हैं। रेखा केवल एक अभिनेत्री नहीं, बल्कि नारी शक्ति और आत्म-सुधार की एक प्रेरणादायक मिसाल हैं। उन्होंने दिखाया कि कैसे एक साधारण लड़की अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से खुद को बदलकर 'बॉलीवुड की दिवा' बन सकती है।

घर-घर के सपनों और संघर्षों की कहानी था 'हम लोग'

दिन जो याद आते हैं

भारत का पहला टीवी धारावाहिक 'हम लोग' दूरदर्शन पर 7 जुलाई 1984 से रात नौ बजे प्रसारित होना शुरू हुआ था। इस अकेले धारावाहिक की लोकप्रियता ने टीवी को घर-घर पहुंचाने में बड़ा योगदान दिया। हफ्ते में एक दिन आने वाले 20 वीं सदी के इस धारावाहिक की यादें आज सीनियर सिटीजन हो चुके लोगों के जेहन में न सिर्फ ताजा हैं, बल्कि किरदार उनके दिलों में जीवंत हैं। यह वह दौर था, जब परिवार ही नहीं आस-पड़ोस के लोगों के साथ या टेलीविजन नहीं होने पर दूसरों के घर जाकर सीरियल या फिल्म देखने का मजा लिया जाता था।

-मनोज त्रिपाठी, कानपुर।

'हम लोग' में आठ सदस्यों वाले एक उत्तर भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार की ऐसी कहानी थी, जिसमें सभी का अलग-अलग व्यक्तित्व था। उनकी जिंदगी, तकलीफों, सपनों, मुश्किलों और कुंठाओं को पूरी संवेदनशीलता के साथ एक छत के नीचे पिरोया गया था। यही वजह थी कि इसके पात्र जैसे शराबी पिता बसेसर राम, मंझली, बड़की, छुटकी और नन्हें न सिर्फ उस समय हर घर की पहचान बन गए थे, बल्कि दर्शक उनसे खुद को या अपने आसपास के लोगों से जुड़ा हुआ महसूस करते थे। इन सभी ने मिलकर एक ऐसे परिवार की रचना कर दी थी कि जिसे आज भी लोग याद करते हैं। धारावाहिक में विनोद नागपाल- (बसेसरराम-पिता), जयश्री अरोड़ा (भागवंती-मां), (सुषमा सेठ-इमरती-दादी), लाहिरी सिंह- दादाजी, राजेश पुरी-लल्लू, सीमा पाहवा-बड़की, दिव्या सेठ-छुटकी तथा लवलीन मिश्रा ने मंझली और अभिनव चतुर्वेदी ने नन्हें का अभिनय किया था।

देश का पहला सोप ओपेरा

'हम लोग' को भारतीय टेलीविजन इतिहास का पहला सोप ओपेरा माना जाता है। यह एक मेक्सिकन टेलीविजन सीरीज वेन कोनमिगो से प्रेरित था, जिसे शिक्षा और मनोरंजन पर बनाया गया था। बताते हैं 'हम लोग' का आइडिया तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री वसंत साठे को आया था, जो 1982 में मेक्सिको के दौरे से लौटे थे। इसी के बाद मनोहर श्याम जोशी ने इस धारावाहिक की कहानी लिखी, जिसे निर्देशक पी. कुमार वासुदेव के सहयोग से विकसित किया गया।

154 एपिसोड, 17 महीने से ज्यादा प्रसारण

'हम लोग' धारावाहिक 17 महीनों से ज्यादा चला और खत्म होने के साथ सबसे लंबे समय तक चलने वाला टीवी सीरियल बन गया था। इसके कुल 154 एपिसोड प्रसारित किए गए थे। एक एपिसोड 25 मिनट का होता था, लेकिन आखिरी एपिसोड, जिसे 17 दिसंबर 1985 को प्रसारित किया गया, वह 55 मिनट का था।

दादा मुनि अंत में आते और छा जाते

'हम लोग' के हर धारावाहिक के अंत में प्रसिद्ध अभिनेता दादा मुनि अशोक कुमार आकर कहानी का सार देने के साथ अपने अलग ही अंदाज में समाज पर कटाक्ष करते हुए सार्थक संदेश देते थे, जिसे दर्शक बेहद पसंद करते थे। इसके चलते ही उन्हें धारावाहिक के दौरान चार लाख से अधिक पत्र मिले थे।

समाज सुधार के लिए जागरूकता

इस धारावाहिक का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन के साथ परिवार नियोजन और सामाजिक सुधारों के प्रति जागरूकता फैलाना था। इसमें शराबखोरी, लैंगिक भेदभाव, गरीबी, अंधविश्वास और करियर की संभावनाओं जैसे मुद्दों को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उठाया गया था।

हिमाचल भवन में रिहर्सल, गुड़गांव में शूटिंग

धारावाहिक की शूटिंग गुड़गांव (अब गुरुग्राम) में की जाती थी, जबकि रिहर्सल दिल्ली में मंडी हाउस के पास हिमाचल भवन में होती थी। इसके किरदार शूटिंग पर जाने से पहले यहां रिहर्सल करते फिर वैन में बैठकर गुड़गांव जाते थे।

और कहानी के अंत में...

दादीजी कैंसर से हार गए, लेकिन उन्होंने अपनी अधूरी तीर्थयात्रा पर जाने का फैसला किया। बसेसर राम सुधर गए। एक सुखद मोड़ पर, उन्होंने परिवार के मुखिया की भूमिका संभाली। भगवंती आज्ञाकारी पत्नी ही रहीं, लेकिन अब वह कम आहें भरती थीं और ज्यादा बोलती थीं। मंझली न तो नायिका बन पाई और न ही गायिका, लेकिन उन्हें इंस्पेक्टर सामदार से प्यार हो गया। बड़की को दमदार आवाज वाले डॉ. अश्विनी के साथ सितारों के नीचे अपना पल मिला। लालू अपने नाम के अनुरूप ही रहे, लेकिन उन्होंने नौकरी का सपना छोड़ दिया। उनकी गरिमापूर्ण और सुशिक्षित पत्नी उषा रानी उनके साथ खड़ी रहीं। नन्हें 'गावस्कर' तो नहीं बन पाए, लेकिन कामिया के साथ, उन्होंने वास्तविक दुनिया में अपनी जगह बनाई। छुटकी डॉक्टर बनने के लिए घर से निकल गई।